जैवसूचना विज्ञान एवं पादप वर्गिकी में नवीन व आगामी प्रवृत्ति पर राष्ट्रीय सम्मेलन

संतोष कुमार अग्रवाल

बी. एन. बंदोदकर कॉलेज ऑफ साइंस, ठाणे (महाराष्ट्र) द्वारा पादप वर्गिकी संघ (A.P.T.), देहरादून तथा ब्लैटर हर्बेरियम, सेंट ज़ेवियर कॉलेज, मुंबई के सहयोग से दिनांक 14 व 15 जनवरी 2015 को एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम थोर्ले बाजीराव पेशवे सभाग्रह, विद्या प्रसारक मंडल, ज्ञानद्वीप, ठाणे में आयोजित हुआ। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य परम्परागत 'बाह्यक्षेत्र' में कार्यरत वर्गीकरण वैज्ञानिकों तथा आधुनिक प्रयोगशाला आधारित वर्गिकी प्रविधि तथा प्रौद्योगिकी के अनुयायियों को एक मंच पर लाकर सम्मेलन के विषय पर उनके विचार ज्ञात करना था। इसके अतिरिक्त इसका ध्येय विद्यार्थियों व शोधकर्ताओं का प्रमुख वैज्ञानिकों से संपर्क कराना था। सम्मेलन से पूर्व महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को अवगत कराने हेतु 12 अगस्त व 13 दिसम्बर 2014 को महाविद्यालय के पतंजली सभाग्रह में पूर्व-सम्मेलन कार्यशालाओं का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम में स्थानीय प्रतिभागियों के अतिरिक्त भारत के उत्तर से दक्षिण तक अनेक स्थानों से आये 275 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनके अतिरिक्त ने 'स्कूल ऑफ साइंस एंड इंजीनियरिंग, टीसाइड यूनीवर्सिटी, मिडिल्सबरो, यू.के. के वरिष्ठ अकादमीशियन व जैवप्रौद्योगिकी के टीम लीडर, प्रो. पट्टानाथु के. एस.एम. रहमान ने प्रतिभाग लिया।

सम्मेलन का उद्घाटन 14 जनवरी प्रातः 9.30 बजे, विद्या प्रसारक मंडल के चेयरमैन, डा. विजय वी. बेडेकर, मुख्य अतिथि, 'एसोसियेशन फॉर प्लान्ट टैक्सोनॉमी' के प्रतिनिधि डा. संतोष अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि डा. पी. के. एस. एम. रहमान, ब्लैटर हर्बेरियम की अध्यक्ष, डा. उज्ज्वला बापट, नाबार्ड की प्रतिनिधि कु. सोनाली भोगले, प्राचार्य व सम्मेलन की संयोजिका डा. माधुरी पेजावर, सह-संयोजिका व ए. पी. टी. की उपाध्यक्ष डा. मेधा मुलगांवकर, संगठन सचिव डा. मोज़ेज कोलेट व अन्य गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया। महाविद्यालय के आशुतोष जोशी व प्रकाश माली के कॉलेज गान तथा संयोजिका के स्वागत भाषण के उपरांत सम्मेलन में सम्मिलित शोध पत्रों के संकलन 'एन ई टी बी टी 2015' का विमोचन हुआ। डा. अग्रवाल व डा. रहमान ने संयुक्त रूप से सम्मेलन के प्रारम्भ की घोषणा की। डा. बेडेकर ने अपने उत्कृष्ट उद्बोधन में वर्गिकी विज्ञान के जनक, कैरोलस लीनियस की कार्यशैली पर प्रकाश डाला। सोनाली भोगले ने नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डिवेलपमेंट द्वारा शैक्षणिक व वैज्ञानिक कार्यक्रमों हेतु दी जाने वाली सहायता की चर्चा की। तत्पश्चात् अपने उद्घाटन भाषण में ए. पी. टी. के प्रतिनिधि तथा शोध पत्रिका 'फाइटोटैक्सोनॉमी' के संपादक, डा. संतोष अग्रवाल ने 'आर. ई. टी. टैक्सा : डाक्यूमेंटेशन एंड कंज़र्वेशन' शीर्षक पर प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने भारत व उत्तराखंड में पाये जाने वाले दुर्लभ, संकटग्रस्त व स्थानिक पौधों की जानकारी के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ द्वारा किये जा रहे संरक्षण उपायों, रेड डेटा बुक व रेड लिस्ट तथा 'कन्वेंशन ऑन इंटरनेशनल ट्रेड इन एन्डेंजर्ड फौना एंड फ्लोरा इन कॉमर्स (सी आई टी ई एस) में सम्मिलित संकटग्रस्त पौधों की विस्तृत जानकारी दी। इसके उपरान्त इंग्लैंड से आमंत्रित प्रो. पट्टानाथु रहमान ने आधारभूत भाषण के माध्यम से, 'बायोइंफॉर्मेटिक्स : एडवांसिंग बायोटेक्नोलॉजी फॉर नोवेल बायोप्रोसेस डिवेलपमेंट' विषय पर किये गये शोध का वर्णन किया। उन्होंने 16 sRNA जीन अनुक्रमण आधारित जीवाणु पहचान तथा उपयोग का उल्लेख करते हुए *स्यूडोमोनास क्लीमेंसिया*

शोध पत्रिका 'फाइटोटैक्सोनॉमी' के संपादक, डा. संतोष अग्रवाल ने 'आर. ई. टी. टैक्सा : डाक्यूमेंटेशन एंड कंज़र्वेशन' शीर्षक पर शानदार प्रस्तुतीकरण दिया

सी.एस.आई.आर.-राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान, लखनऊ के मुख्य वैज्ञानिक, डा. अनिल कुमार गोयल ने, 'सी.एस. आई.आर.- नेशनल बॉटेनिक गार्डन : ए रिपोज़िटरी ऑफ प्लांट डाइवर्सिटी आइडियल फॉर सिस्टेमेटिक स्टडीज़' शीर्षक से अति सुंदर छाया चित्रों द्वारा राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान में प्राप्य अनेक दुर्लभ पादप जातियों का प्रदर्शन किया तथा वर्गिकी अध्ययन व संरक्षण में वनस्पति उद्यान की भूमिका से अवगत कराया

व *एक्ज़ीगुओ बैक्टीरियम* स्पे. पीआर 10.6 (PR10.6) के नेबर-ज्वाइनिंग एनालिसिस व डिस्टेंस मैट्रिक्स द्वारा जातिवृत्त वृक्ष निर्माण का वर्णन किया।

प्रथम तकनीकी सत्र में सी.एस.आई.आर. -राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान, लखनऊ के प्रमुख वैज्ञानिक, डा. अनिल कुमार गोयल ने, 'सी.एस.आई.आर.-नेशनल बॉटेनिक गार्डन : ए रिपोज़िटरी ऑफ प्लांट डाइवर्सिटी आइडियल फॉर सिस्टेमेटिक स्टडीज़' शीर्षक से अति सुंदर छाया चित्रण द्वारा राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान में प्राप्य अनेक दुर्लभ पादप जातियों का प्रदर्शन किया तथा वर्गिकी अध्ययन व संरक्षण में वनस्पति उद्यान की भूमिका से अवगत कराया। तत्पश्चात् नेशनल फंगल कलेक्शन, अगरकर रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे के वैज्ञानिक डा. अभिषेक बघेला ने, 'डी.एन.ए. बार कोडिंग : फ्रॉम थ्योरी टू एप्लीकेशंस इन टेक्सोनॉमी एंड मॉलीक्यूलर फाइलोजेनेटिक्स' विषय पर व्याख्यान दिया। द्वितीय सत्र में, टी. डी. एम. लैबोरेट्रीज़, मुंबई के डा. शशि कुमार मेनन ने, 'बायोडाइवर्सिटी एंड हैबिटेट डाइवर्सिटी : टू साइड्स ऑफ द सेम कॉइन' शीर्षक से अंबोली घाट, महाराष्ट्र में किये शोध कार्य का वर्णन किया। इसी सत्र में 60 से अधिक पोस्टरों की प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसमें डा. संतोष अग्रवाल व डा. रहमान ने विभिन्न श्रेणियों में पोस्टरों का चयन किया। डा. शारदा वैद्य, उल्हास नगर तथा डा. सरिता हाजिर्मिस, ठाणे ने शुष्क हर्बेरियम प्रतियोगिता का मूल्यांकन किया। तृतीय सत्र में गोवा विश्वविद्यालय के प्रो. बर्नार्ड रोड्रिग्स द्वारा 'एडवांसेज इन आर्बुस्कुलर मायकोराइज़ा बायोटेक्नोलॉजी' विषय पर कृषि में इनके उपयोग व उत्पादन वृद्धि पर विचार रखे।

डा. अग्रवाल व डा. रहमान ने संयुक्त रूप से सम्मेलन के प्रारम्भ की घोषणा की। डा. बेडेकर ने अपने उत्कृष्ट उद्बोधन में वर्गिकी विज्ञान के जनक, कैरोलस लीनियस की कार्यशैली पर प्रकाश डाला। सोनाली भोगले ने नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डिवेलपमेंट द्वारा शैक्षणिक व वैज्ञानिक कार्यक्रमों हेतु दी जाने वाली सहायता की चर्चा की।

15 जनवरी को चतुर्थ सत्र में मुंबई विश्वविद्यालय के प्रो. संजय देशमुख ने जैवविविधता पर व्याख्यान दिया। उनका विषय था, 'बायोडाइवर्सिटी ऑफ इंडिया एंड द वर्ल्ड' : पर्सपेक्टिव फॉर कंज़र्वेशन एंड मैनेजमेंट। पांचवे सत्र में मुख्यतः वर्गिकी में आधुनिक विधियों, कम्प्यूटेशनल तकनीक इत्यादि पर प्रस्तुतीकरण हुए। इस सत्र में डाटा साइंस के डा. आशीष तेंदुलकर द्वारा 'कम्प्यूटेशनल एनालिसिस ऑफ प्रोटींस फंक्शनल रेसिड्यू प्रेडिक्शन' तथा सेंट जैवियर कॉलेज, मुंबई की डा. शिल्पा वेरेकर द्वारा 'माइक्रोबियल जीनोम माइनिंग इन ड्रग डिस्कवरी' द्वारा जीनोम अनुक्रमण की वर्गिकी में महत्ता दर्शाई गई। छठे सत्र में, नेशनल कैमिकल लेबोरेट्री, पुणे के बायोकैमिकल डिविजन के पूर्व अध्यक्ष डा. एम. सी. श्रीनिवासन ने अपने व्याख्यान, 'रेलेवेंस ऑफ टेक्सोनॉमी इन एन एरा ऑफ इंडस्ट्रियल बायोटेक्नोलॉजी विद स्पेशल रेफरेंस टू फंगल सिस्टम्स' के माध्यम से परंपरागत वर्गिकी व आधुनिक तकनीकों का सम्मिश्रण दर्शाया।

समापन सत्र प्रमुख वर्गिकी विज्ञ व 'फ्लोरा ऑफ महाराष्ट्र' के लेखक डा. एम. आर. एल्मिडा तथा डा. ए. आर. कुलकर्णी द्वारा प्रतिपादित किया गया। इस सत्र में प्रतिभागियों के विचार सुने गये तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। अन्त में सम्मेलन के संगठन सचिव, डा. मोज़ेज़ कोलेट द्वारा आभार व्यक्त कर सम्मेलन का समापन हुआ। कुल छः तकनीकी सत्रों में 16 आमंत्रित व्याख्यान व 30 से अधिक शोध पत्र पढ़े गये।

विद्या प्रसारक मंडल के चेयरमैन, डॉ. विजय वी. बेडेकर के साथ हाथ मिलाते हुए डॉ. संतोष अग्रवाल

संपर्क सूत्र :
डा. संतोष कुमार अग्रवाल, पूर्व विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, डी. बी. एस. स्नातकोत्तर विद्यालय, देहरादून (उत्तराखण्ड)
[ई-मेल : skagarwal.dbs@gmail.com]